

# VIDYA BHAWAN BALIKA VIDYA PITH

## शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय बिहार

Class 12 commerce Sub. ECO(b) Date 17.04.2021

Teacher name – Ajay Kumar Sharma

### INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE

*Question 14:*

When was India's first official census operation undertaken?

**ANSWER:**

India's first official census operation was undertaken in the year 1881. After that the census has been conducted after every 10 years. It involves a detailed estimation of population size, along with a complete demographic profile of the country.

---

*Question 15:*

Indicate the volume and direction of trade at the time of independence.

**ANSWER:**

During the colonial rule, the British followed a discriminatory tariff policy under which they imposed heavy tariffs (export duties) on India's export of handicraft products, while allowing free export of India's raw material to Britain and free import of British products to India. This made Indian exports costlier and its international demand fell drastically. India's export basket during the colonial rule comprised mainly of primary products like sugar, jute, silk, etc. and the imports comprised of finished consumer goods like cotton, woolen clothes, etc, from Britain. As the monopoly power of India's export and import rested with Britain, so, more than half of India's trade was restricted to Britain and the remaining imports were directed towards China, Persia, and Srilanka. The opening up of Suez Canal further intensified the monopoly power of the British over India's foreign trade. It led to the fast movement of goods from India to Britain and vice-versa. The surplus generated from India's foreign trade was not invested in Indian economy; rather it was used for administrative and war purposes. This led to the drain of Indian wealth to Britain.

---

*Question 16:*

Were there any positive contributions made by the British in India? Discuss.

## ANSWER:

Yes, there were various positive contributions that were made by the British in India. The contributions were not intentional but purely the effects of colonial exploitation of the British. The following are the positive contributions made by the British:

**1. Introduction of Railways:** The introduction of railways by the British was a breakthrough in the development process of Indian economy. It opened up the cultural and geographical barriers and facilitated commercialisation of Indian agriculture.

**2. Introduction of Commercialisation of Agriculture:** The introduction of commercial agriculture is an important breakthrough in the history of Indian agriculture. Prior to the advent of the British, Indian agriculture was of subsistence nature. But with the commercialisation of agriculture, the agricultural production was carried out as per the market requirements. It was due to this factor that today India can aim at attaining self-sufficiency in food grains production.

**3. Introduced Free Trade to India:** British forced India to follow free trade pattern during the colonial rule. This is the key concept of globalisation today. The free trade provided domestic industry with a platform to compete with the Britain industries. The introduction of free trade led to an increase in the volume of India's export rapidly.

**4. Development of Infrastructure:** The infrastructure developed in India by the British proved as useful tool to check the spread of famines. The telegram and postal services served Indian public.

**5. Promoted Western Culture:** English as a language promoted westernised form of education. The English language acted as a window to the outside world. This has integrated India with the rest of the world.

**6. Role Model:** The way and the technique of British administration acts as a role model for the Indian politicians and planners. It helped Indian politicians to govern the country in an efficient and effective manner.

प्रश्न 14:

भारत का पहला आधिकारिक जनगणना अभियान कब शुरू किया गया था?

उत्तर:

भारत का पहला आधिकारिक जनगणना अभियान वर्ष 1881 में शुरू किया गया था। उसके बाद हर 10 वर्षों के बाद जनगणना की गई है। इसमें देश के पूर्ण जनसांख्यिकीय प्रोफाइल के साथ जनसंख्या के आकार का विस्तृत अनुमान शामिल है।

प्रश्न 15:

स्वतंत्रता के समय व्यापार की मात्रा और दिशा को इंगित करें।

उत्तर:

औपनिवेशिक शासन के दौरान, ब्रिटिश ने एक भेदभावपूर्ण टैरिफ नीति का पालन किया, जिसके तहत उन्होंने भारत के हस्तशिल्प उत्पादों के निर्यात पर भारी शुल्क (निर्यात शुल्क) लगाया, जबकि भारत के कच्चे माल को ब्रिटेन में निर्यात करने और भारत को ब्रिटिश उत्पादों के मुफ्त आयात की अनुमति दी। इससे भारतीय निर्यात महंगा हो गया और इसकी अंतर्राष्ट्रीय मांग में भारी गिरावट आई। औपनिवेशिक शासन के दौरान भारत की निर्यात टोकरी में मुख्य रूप से चीनी, जूट, रेशम इत्यादि जैसे प्राथमिक उत्पाद और आयात किए गए उपभोक्ता सामान जैसे कपास, ऊनी कपड़े, इत्यादि शामिल थे। चूंकि भारत के निर्यात और आयात की एकाधिकार शक्ति ब्रिटेन के साथ थी, इसलिए, भारत का आधा से अधिक व्यापार ब्रिटेन तक ही सीमित था और शेष आयात चीन, फारस और श्रीलंकाई की ओर निर्देशित थे। स्वेज नहर के खुलने से भारत के विदेशी व्यापार पर अंग्रेजों की एकाधिकार शक्ति और बढ़ गई। इसने भारत से ब्रिटेन और इसके विपरीत माल की तेजी से आवाजाही की। भारत के विदेशी व्यापार से उत्पन्न अधिशेष भारतीय अर्थव्यवस्था में निवेश नहीं किया गया था; बल्कि इसका उपयोग प्रशासनिक और युद्ध के उद्देश्यों के लिए किया गया था। इससे ब्रिटेन को भारतीय धन की प्राप्ति हुई।

प्रश्न 16:

क्या भारत में अंग्रेजों द्वारा कोई सकारात्मक योगदान दिया गया था? चर्चा करें।

उत्तर:

हां, भारत में अंग्रेजों द्वारा किए गए विभिन्न सकारात्मक योगदान थे। योगदान जानबूझकर नहीं बल्कि विशुद्ध रूप से अंग्रेजों के औपनिवेशिक शोषण के प्रभाव थे। अंग्रेजों द्वारा किए गए सकारात्मक योगदान निम्नलिखित हैं:

1. रेलवे का परिचय: अंग्रेजों द्वारा रेलवे का परिचय भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास प्रक्रिया में एक सफलता थी। इसने सांस्कृतिक और भौगोलिक बाधाओं को खोल दिया और भारतीय कृषि के व्यावसायीकरण की सुविधा प्रदान की।

2. कृषि के व्यावसायीकरण का परिचय: भारतीय कृषि के इतिहास में वाणिज्यिक कृषि की शुरुआत एक महत्वपूर्ण सफलता है। अंग्रेजों के आगमन से पहले, भारतीय कृषि निर्वाह प्रकृति की थी। लेकिन कृषि के व्यावसायीकरण के साथ, कृषि उत्पादन बाजार की आवश्यकताओं के अनुसार किया गया था। यह इस कारक के कारण था कि आज भारत खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त कर सकता है।

3. भारत को मुक्त व्यापार का परिचय: ब्रिटिश ने भारत को औपनिवेशिक शासन के दौरान मुक्त व्यापार पैटर्न का पालन करने के लिए मजबूर किया। यह आज वैश्वीकरण की प्रमुख अवधारणा है। मुक्त व्यापार ने घरेलू उद्योगों को ब्रिटेन के उद्योगों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए एक मंच प्रदान किया। मुक्त व्यापार की शुरुआत से भारत के निर्यात की मात्रा में तेजी से वृद्धि हुई।

4. अवसंरचना का विकास: अंग्रेजों द्वारा भारत में विकसित बुनियादी ढांचा अकाल के प्रसार की जाँच करने के लिए उपयोगी उपकरण साबित हुआ। टेलीग्राम और डाक सेवाओं ने भारतीय जनता की सेवा की।

5. प्रचारित पश्चिमी संस्कृति: अंग्रेजी भाषा ने शिक्षा के पश्चिमी रूप को बढ़ावा दिया। अंग्रेजी भाषा ने बाहरी दुनिया के लिए एक खिड़की के रूप में काम किया। इसने शेष विश्व के साथ भारत को एकीकृत किया है।

6. रोल मॉडल: ब्रिटिश प्रशासन का तरीका और तकनीक भारतीय राजनेताओं और योजनाकारों के लिए एक रोल मॉडल के रूप में कार्य करता है। इसने भारतीय राजनेताओं को एक कुशल और प्रभावी तरीके से देश को संचालित करने में मदद की।

---